International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

विद्यालयी माध्यम (हिन्दी एवं अंग्रेज़ी) के संदर्भ में छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता: एक तुलनात्मक अध्ययन

आयूष मिश्र [1*], प्रो.राम सरदार यादव [2]

[1] शोधार्थी (पीएच.डी.), शिक्षा संकाय, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध-निर्देशक, शिक्षा संकाय, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * आयूष मिश्र

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21295640

सार

(प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा उसके विभिन्न आयामों—संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं स्वतंत्रता के अभाव—का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में लखनऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11 में अध्ययनरत 14–16 वर्ष आयुवर्ग की 100 छात्राओं का चयन किया गया, जिनमें हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम की 50–50 छात्राएँ सम्मिलित थीं। अध्ययन में डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा विकसित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (Emotional Maturity Scale) का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण द्वारा किया गया।

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों की छात्राओं की समग्र संवेगात्मक परिपक्वता में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया ($t = 3.82$, $p < .01$)। मापनी के मानकों के अनुसार अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों की छात्राएँ हिन्दी माध्यम विद्यालयों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक रूप से परिपक्व पाई गईं। संवेगात्मक परिपक्वता के सभी आयामों—संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा स्वतंत्रता के अभाव—में भी दोनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालयी माध्यम के साथ-साथ विद्यालयी वातावरण, शिक्षण-पद्धति, उपलब्ध संसाधन, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे कारक छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।)

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-06-2026
- **Accepted:** 29-06-2026
- **Published:** 10-07-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 87-92
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

आयूष मिश्र, प्रो.राम सरदार यादव. विद्यालयी माध्यम (हिन्दी एवं अंग्रेज़ी) के संदर्भ में छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता: एक तुलनात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):87-92.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: संवेगात्मक परिपक्वता, हिन्दी माध्यम, अंग्रेज़ी माध्यम, छात्राएँ, विद्यालयी वातावरण, किशोरावस्था।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा की अवधारणा निरंतर व्यापक होती जा रही है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की विविध परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने योग्य बनाना भी है। इसी संदर्भ में संवेगात्मक परिपक्वता (Emotional Maturity) का विशेष महत्व उभरकर सामने आया है। संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपनी भावनाओं को पहचानता है, नियंत्रित करता है तथा सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप उनका संतुलित एवं सकारात्मक उपयोग करता है।

किशोरावस्था मानव विकास की एक संवेदनशील अवस्था है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक स्तर पर तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में यदि विद्यार्थियों का संवेगात्मक विकास संतुलित रूप से होता है तो उनमें आत्मविश्वास, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। इसके विपरीत संवेगात्मक अपरिपक्वता तनाव, असमायोजन, आक्रामकता, हीनभावना तथा शैक्षिक कठिनाइयों का कारण बन सकती है।

विद्यालय बालक के समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है। विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों के साथ संबंध, भाषा-माध्यम तथा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को प्रभावित करती हैं। हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के वातावरण, संसाधनों, शिक्षण शैली तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में विद्यमान भिन्नताएँ छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित कर सकती हैं। इसी दृष्टि से दोनों माध्यमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

वर्तमान समय में किशोर विद्यार्थियों के समक्ष प्रतिस्पर्धा, शैक्षिक दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक परिवर्तन जैसी अनेक चुनौतियाँ उपस्थित हैं। इन परिस्थितियों में संवेगात्मक परिपक्वता का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी तनाव का बेहतर प्रबंधन करते हैं, आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेते हैं तथा सामाजिक संबंधों में संतुलन बनाए रखते हैं।

हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के वातावरण, शिक्षण-पद्धति, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा संसाधनों में पाए जाने वाले अंतर छात्राओं के संवेगात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। अतः दोनों माध्यमों की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2. अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं की समग्र संवेगात्मक परिपक्वता तथा उसके विभिन्न आयामों—संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं स्वतंत्रता के अभाव—का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

शून्य परिकल्पना (H_0): हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा उसके विभिन्न आयामों—संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं स्वतंत्रता के अभाव—में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

3. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श (Sample)

अध्ययन हेतु लखनऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 11 में अध्ययनरत 14–16 वर्ष आयु वर्ग की कुल 100 छात्राओं का चयन किया गया। प्रतिदर्श में हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम दोनों प्रकार के विद्यालयों की छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

उपकरण (Tool)

अध्ययन में डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (Emotional Maturity Scale) का प्रयोग किया गया। इस मापनी की विश्वसनीयता एवं वैधता पूर्व स्थापित है तथा यह भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित की गई है।

4. परिणाम एवं विवेचना

- अंग्रेज़ी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समग्र संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं t-परीक्षण

समूह	N	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (p)	परिणाम
अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय	50	98.42	27.29	3.82	p < .01	सार्थक
हिन्दी माध्यम विद्यालय	50	121.94	34.07			

नोट: df = 98, p < .01 (सार्थक)

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अंग्रेज़ी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम विद्यालयों की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के कुल स्कोर का तुलनात्मक स्तंभ-चित्र

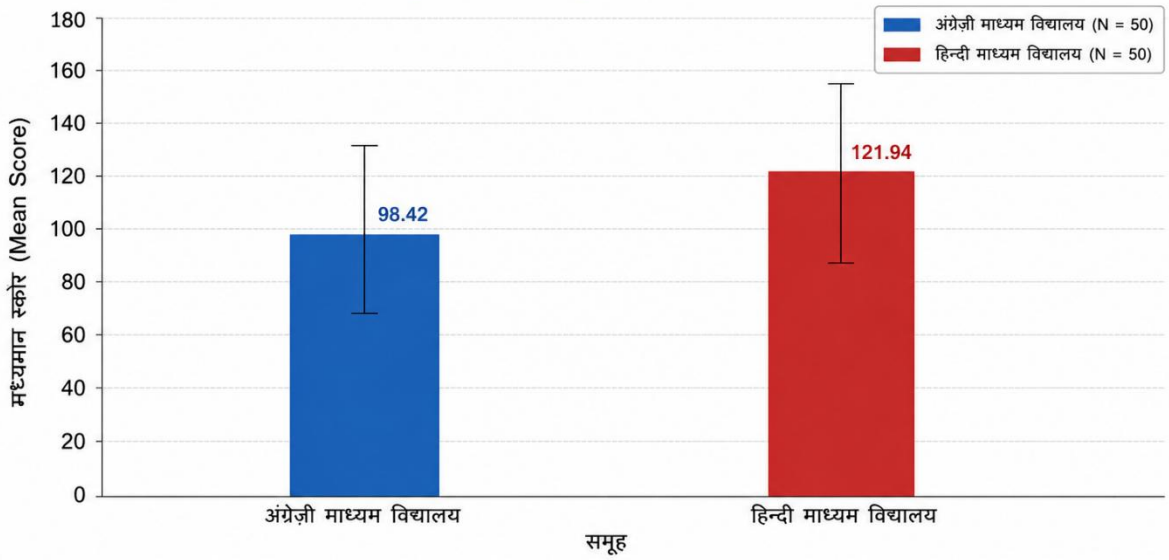

समूह	N	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (p)	परिणाम
अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय	50	98.42	27.29	3.82	$p < .01$	सार्थक
हिन्दी माध्यम विद्यालय	50	121.94	34.07			

नोट: त्रुटि रेखाएँ (Error Bars) ± SD को दर्शाती हैं। ** $p < .01$

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समग्र संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 98.42 (SD = 27.29) तथा हिन्दी माध्यम विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का मध्यमान 121.94 (SD = 34.07) प्राप्त हुआ।

डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा विकसित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी के मानकों के अनुसार कम प्राप्तांक उच्च संवेगात्मक परिपक्वता तथा अधिक प्राप्तांक अपेक्षाकृत निम्न संवेगात्मक परिपक्वता का संकेत देते हैं। इस आधार पर अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय की छात्राएँ हिन्दी माध्यम विद्यालय की छात्राओं की तुलना में अधिक संवेगात्मक रूप से परिपक्व पाई गईं।

दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय जाँच हेतु स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्राप्त t-मूल्य 3.82 ($p < .01$) .01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज़ी एवं हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समग्र संवेगात्मक परिपक्वता में वास्तविक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना—"हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"—अस्वीकृत की जाती है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालयी माध्यम छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है तथा अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ हिन्दी माध्यम विद्यालयों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक परिपक्वता प्रदर्शित करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता हिन्दी माध्यम विद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाई गई। यह निष्कर्ष Y. Singh एवं M. Bhargava (1990) द्वारा प्रतिपादित संवेगात्मक परिपक्वता की अवधारणा के अनुरूप है, जिसके अनुसार कम प्राप्तांक उच्च संवेगात्मक परिपक्वता का द्योतक होता है। इसी प्रकार Daniel Goleman (1995) ने प्रतिपादित किया है कि आत्म-नियमन, आत्म-जागरूकता तथा सामाजिक कौशल व्यक्ति के प्रभावी भावनात्मक व्यवहार के प्रमुख आधार हैं।

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष आंशिक रूप से M. K. Panth, N. Chaurasia एवं M. Gupta (2015) के अध्ययन से भी साम्य रखते हैं, जिन्होंने पाया कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके समायोजन एवं शैक्षिक परिवेश से संबंधित होती है। इसी प्रकार S. A. Jose एवं I. C. Swamy (2022) ने किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता को विद्यालयी एवं सामाजिक परिवेश से प्रभावित होने वाला महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक गुण माना है। इसके अतिरिक्त Organisation for Economic Co-operation and Development (2021) ने भी यह प्रतिपादित किया है कि विद्यालयी वातावरण, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा सहायक शैक्षिक अनुभव विद्यार्थियों के सामाजिक एवं संवेगात्मक कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः वर्तमान अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में प्राप्त अंतर का संबंध केवल शिक्षण-माध्यम से नहीं, बल्कि विद्यालयी वातावरण, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षण-पद्धति, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा विद्यार्थियों को उपलब्ध सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के अवसरों से भी हो सकता है। इसलिए इन निष्कर्षों की व्याख्या बहुआयामी संदर्भ में करना अधिक उपयुक्त होगा।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण

आयाम	समूह	N	मध्यमान	SD	t-मूल्य	p-स्तर	परिणाम
संवेगात्मक अस्थिरता	अंग्रेज़ी माध्यम	50	20.54	4.17	6.43	p < .01	सार्थक
	हिन्दी माध्यम	50	28.34	7.50			
संवेगात्मक प्रत्यागमन	अंग्रेज़ी माध्यम	50	22.34	6.38	4.27	p < .01	सार्थक
	हिन्दी माध्यम	50	28.58	8.12			
सामाजिक कुसमायोजन	अंग्रेज़ी माध्यम	50	19.76	6.78	2.97	p < .01	सार्थक
	हिन्दी माध्यम	50	23.60	6.14			
व्यक्तित्व विघटन	अंग्रेज़ी माध्यम	50	18.84	4.19	2.58	p < .05	सार्थक
	हिन्दी माध्यम	50	21.62	6.38			
स्वतंत्रता का अभाव	अंग्रेज़ी माध्यम	50	16.94	5.22	2.56	p < .05	सार्थक
	हिन्दी माध्यम	50	19.80	5.93			

नोट: df = 98; कम प्राप्तांक अधिक संवेगात्मक परिपक्वता को सूचित करते हैं।

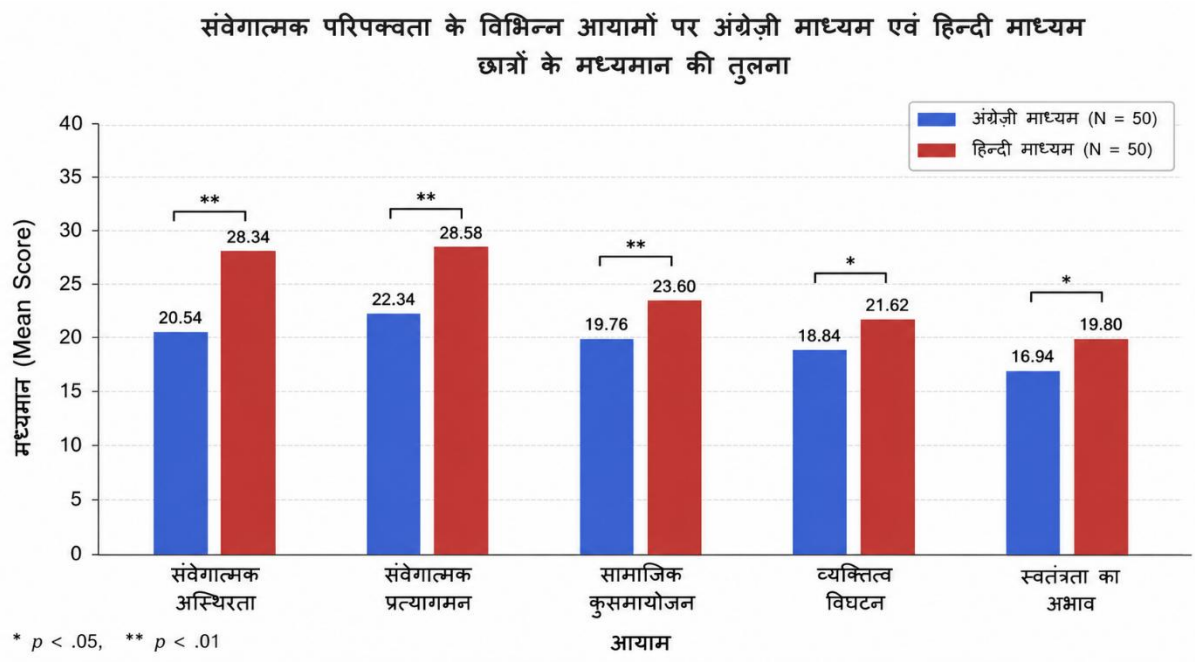

प्रस्तुत तालिका में हिन्दी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के पाँचों आयामों—संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा स्वतंत्रता के अभाव—का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में प्रत्येक समूह में 50-50 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सभी आयामों में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा कम है। डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा विकसित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी के अनुसार कम प्राप्तांक उच्च संवेगात्मक परिपक्वता तथा अधिक प्राप्तांक अपेक्षाकृत अधिक संवेगात्मक अपरिपक्वता का द्योतक होते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राएँ हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक रूप से परिपक्व हैं। संवेगात्मक अस्थिरता के आयाम में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 20.54 (SD = 4.17) तथा हिन्दी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 28.34 (SD = 7.50) प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त t-मूल्य 6.43 ($p < .01$) सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं में तनाव, चिंता, आवेगशीलता, चिड़चिड़ापन तथा परिस्थितियों से शीघ्र विचलित होने
जैसी प्रवृत्तियाँ अपेक्षाकृत कम पाई जाती हैं। इसके विपरीत हिन्दी माध्यम की छात्राओं में संवेगात्मक अस्थिरता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

संवेगात्मक प्रत्यागमन के आयाम में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 22.34 (SD = 6.38) तथा हिन्दी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 28.58 (SD = 8.12) प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 4.27 ($p < .01$) यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्य अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे संकेत मिलता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राएँ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना अधिक संतुलित ढंग से करती हैं तथा उनमें अपरिपक्व व्यवहार, पलायनवादी प्रवृत्ति एवं भावनात्मक निर्भरता अपेक्षाकृत कम पाई जाती है।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सामाजिक कुसमायोजन के आयाम में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 19.76 (SD = 6.78) तथा हिन्दी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 23.60 (SD = 6.14) प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 2.97 ($p < .01$) .01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राएँ सामाजिक परिस्थितियों में बेहतर समायोजन स्थापित करने, सहयोगात्मक व्यवहार अपनाने तथा स्वस्थ सामाजिक संबंध विकसित करने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम हैं। दूसरी ओर हिन्दी माध्यम की छात्राओं में सामाजिक समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ अपेक्षाकृत अधिक पाई गईं।

व्यक्तित्व विघटन के आयाम में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 18.84 (SD = 4.19) तथा हिन्दी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 21.62 (SD = 6.38) प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 2.58 ($p < .05$) .05 स्तर पर सार्थक है। यह परिणाम इंगित करता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं में आत्मविश्वास, आत्म-नियंत्रण, निर्णय क्षमता तथा व्यक्तित्व का समुचित संगठन हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा बेहतर पाया गया।

स्वतंत्रता के अभाव के आयाम में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 16.94 (SD = 5.22) तथा हिन्दी माध्यम की छात्राओं का मध्यमान 19.80 (SD = 5.93) प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 2.56 ($p < .05$) सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं में स्वतंत्र निर्णय लेने, उत्तरदायित्व ग्रहण करने तथा आत्मनिर्भर व्यवहार प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति हिन्दी माध्यम की छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि संवेगात्मक परिपक्वता के सभी आयामों में दोनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा यह निष्कर्ष स्वीकार किया जाता है कि विद्यालयी माध्यम छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

प्राप्त निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि विद्यालयी माध्यम केवल शिक्षण की भाषा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह विद्यालय के समग्र शैक्षिक वातावरण, सह-शैक्षिक गतिविधियों, संवाद शैली, आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर, परामर्श व्यवस्था तथा सामाजिक सहभागिता को भी प्रभावित करता है। जिन विद्यालयों में विद्यार्थियों को विचार व्यक्त करने, समूह कार्य करने, समस्या समाधान, नेतृत्व विकास तथा जीवन-कौशल आधारित गतिविधियों के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, वहाँ संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च विकसित होने की संभावना रहती है।

यह भी संभव है कि अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में उपलब्ध संसाधन, अपेक्षाकृत कम छात्र-शिक्षक अनुपात, सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों की विविधता, मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ तथा अभिभावकों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि जैसी परिस्थितियाँ छात्राओं के संवेगात्मक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हों। दूसरी ओर हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर विद्यालयी संसाधनों, सामाजिक परिवेश तथा पारिवारिक परिस्थितियों का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इन अंतरों का कारण केवल शिक्षण का माध्यम नहीं माना जा सकता; अनेक सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक कारक भी इन परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों एवं स्थापित सैद्धांतिक अवधारणाओं से पर्याप्त सीमा तक साम्य रखते हैं। Y. Singh एवं M. Bhargava (1990) के अनुसार संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति में संवेगात्मक स्थिरता, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक समायोजन तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है। वर्तमान अध्ययन में भी अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों की छात्राओं का प्रदर्शन संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रत्यागमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा स्वतंत्रता के अभाव जैसे सभी आयामों में अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया, जो इस अवधारणा का समर्थन करता है (Singh & Bhargava, 1990) ।

इसी प्रकार Walter C. D. Dandekar (1969) ने संवेगात्मक विकास को व्यक्तित्व विकास का आधार माना है, जबकि Daniel Goleman (1995) के अनुसार आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सामाजिक दक्षता तथा प्रभावी संबंध-प्रबंधन व्यक्ति के स्वस्थ संवेगात्मक विकास के प्रमुख घटक हैं। वर्तमान अध्ययन में अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं द्वारा इन आयामों में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन इन सैद्धांतिक प्रतिपादनों के अनुरूप प्रतीत होता है (Dandekar, 1969; Goleman, 1995) ।

वर्तमान निष्कर्ष M. K. Panth, N. Chaurasia एवं M. Gupta (2015) के अध्ययन से भी आंशिक रूप से मेल खाते हैं, जिन्होंने विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सकारात्मक संबंध की पुष्टि की थी। इसी प्रकार S. A. Jose एवं I. C. Swamy (2022) ने निष्कर्ष दिया कि किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता विद्यालयी अनुभवों, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत विकास से प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त Organisation for Economic Co-operation and Development (2021, 2024) ने भी सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, सहयोगात्मक विद्यालयी वातावरण तथा जीवन-कौशल आधारित शिक्षण को विद्यार्थियों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण आधार माना है।

अतः वर्तमान अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि विद्यालयी माध्यम के आधार पर प्राप्त अंतर की व्याख्या केवल भाषा के संदर्भ में नहीं की जानी चाहिए, बल्कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षण-पद्धति, उपलब्ध संसाधनों, सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों, परामर्श सेवाओं तथा विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे बहुआयामी कारकों के संयुक्त प्रभाव के रूप में की जानी चाहिए। इस प्रकार वर्तमान अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों एवं स्थापित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप संवेगात्मक परिपक्वता के विकास में विद्यालयी परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करता है।

भविष्य के लिए सुझाव (Suggestions for Future Research)

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल लखनऊ जनपद की छात्राओं तक सीमित है। भविष्य में विभिन्न राज्यों एवं भौगोलिक क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सम्मिलित कर व्यापक अध्ययन किया जा सकता है।
2. भविष्य के अध्ययनों में छात्र एवं छात्राओं दोनों को सम्मिलित कर लिंग-आधारित तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. सरकारी, निजी, ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि, आत्मसम्मान, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जीवन-संतुष्टि, सामाजिक समायोजन तथा विद्यालयी अनुकूलन जैसे मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक चरों के साथ संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।
5. संवेगात्मक परिपक्वता के विकास हेतु परामर्श कार्यक्रमों, जीवन-कौशल प्रशिक्षण तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन किया जा सकता है।
6. अनुदैर्ध्य (Longitudinal) शोधों के माध्यम से किशोरावस्था से युवावस्था तक संवेगात्मक परिपक्वता के विकासक्रम का अध्ययन किया जा सकता है।
7. भविष्य में मिश्रित शोध-विधि (Mixed Method Research) अपनाकर मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों के आधार पर अधिक व्यापक एवं गहन निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।
8. डिजिटल अधिगम, सोशल मीडिया उपयोग, पारिवारिक वातावरण, पालन-पोषण शैली तथा विद्यालयी संस्कृति जैसे समकालीन कारकों का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव भी भविष्य के अनुसंधानों का महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. Best JW, Kahn JV. *Research in education*. 10th ed. Boston: Pearson; 2016.
2. Creswell JW, Creswell JD. *Research design: Qualitative, quantitative, and mixed methods approach*. 5th ed. Thousand Oaks (CA): Sage Publications; 2018.
3. Dandekar WN. *Psychological foundations of education*. New Delhi: Macmillan; 1969.
4. Field A. *Discovering statistics using IBM SPSS statistics*. 5th ed. London: Sage Publications; 2018.
5. Goleman D. *Emotional intelligence: Why it can matter more than IQ*. New York: Bantam Books; 1995.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Corresponding Author

आयुष मिश्र शिक्षा संकाय, का० सु० साकेत पी०जी० कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत से संबद्ध हैं। उनकी शोध रुचियों में शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, शिक्षक शिक्षा तथा समकालीन शैक्षिक अनुसंधान शामिल हैं। वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और नवाचार आधारित शिक्षण पद्धतियों के विकास हेतु निरंतर शैक्षणिक एवं शोध कार्यों में सक्रिय हैं।

© 2026 आयूष मिश्र, प्रो. राम सरदार यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/